'कामायनी' प्रसाद की अंतिम कृति है। इसके कथानक का आधार वह प्राचीन आख्यान है जिसके अनुसार मनु के अतिरिक्त सम्पूर्ण देव-जाति का प्रलय का शिकार हो जाती है और मनु तथा श्रद्धा या कामायनी के संयोग से मानव-सभ्यता

Scanned with CamScanner

का प्रवर्तन होता है। इसका कथानक बहुत संक्षिप्त है लेकिन कवि ने इसमें जीवन के अनेक पक्षों को समन्वित करके मानव-जीवन के लिए एक व्यापक आदर्श प्रस्तुत व्यवस्था की स्थापना का प्रयास किया है। 'कामायनी' के एक सन्दर्भ का सम्बन्ध मनु और श्रद्धा के व्यक्तिगत जीवन और प्रणय के साथ है। इड़ा के अंश चरित्र का एक अंश भी इस प्रसंग से संबद्ध है। प्रसाद ने इन प्रमुख पात्रों के चित्रांकन में मनुष्य की अनुभूतियों, कामनाओं और आकांक्षाओं की अनेकरूपता का वर्णन किया है। यह 'कामायनी' की चेतना का मनोवैज्ञानिक पक्ष है। कवि ने मनु आदि के माध्यम से मानव-मात्र के मनोजगत् के विविध पक्षों का चित्रण 'चिन्ता', 'आशा', 'वासना', 'ईर्ष्या', 'संघर्ष', 'आनन्द' आदि सर्गों में किया है।

* * * * * *

'कामायनी' केवल मनु आदि के व्यक्ति-जीवन की ऐतिहासिक कथा ही नहीं है, इन पात्रों की सांकेतिक व्यंजनाएँ भी इसमें हैं, जिन्हें स्वयं कवि ने कामायनी की भूमिका में स्वीकार किया है: "यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में भी रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है। इसलिए मनु, श्रद्धा और इड़ा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। मनु अर्थात् मन के दोनों पक्ष, हृदय और मस्तिष्क का संबंध क्रमशः श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है।" कवि की इस उक्ति के आधार पर 'कामायनी' में रूपक-तत्व के विशद विवेचन का प्रयास भी किया